सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली | श्री साई शके : 30
अंक – 109 | नवम्बर – 2011

AA ÅAA Jh I kbZukFkk; ue% AA
AA ÅAA Jh I nx: ukFkn nknk; ue%AA

गुरू बंधु भगिनियों से,

ßx: opuÞ

इस जगत में हमारे जैसे अनेक अन्य व्यक्तियों को जीवन मतलब क्या ? उपासना क्या है ? जीवन की प्राप्ती क्यों हुई, उसकी सार्थकता कैसे हो ? इत्यादी आवश्यक और महत्वपूर्ण विषयों का ज्ञान असंख्य व्यक्तियों को नहीं है। संसार में अगर किसी व्यक्ति को इसका ज्ञान है "अगर है तो" वह अपने अनेक जनमों की उपासना से, सेवा से ईश्वर की कृपा प्राप्त करने के लिये पात्र होता है। उस व्यक्ति की जीवन का जो समय कठिन साधना करके, इस कृपा प्राप्ती के लिए खर्च होता है ? वैसा समय संसार के अन्य व्यक्तियों न हो, और उन्हें सहजता से कोई आसान साधना से ईश्वरीय कृपा प्राप्त हो, यह सोचकर एक मार्ग स्थापन करता है जिसका लाभ संसार के अन्य व्यक्ति लेते है और जिस प्रकार उनके जीवन का बहुमोल समय खर्च न होते हुए, उन्हें ईश्वरीय कृपा का लाभ आसानी से हुआ, इसी तरह संसार के अन्य व्यक्तियों को वह कृपा आसानी से प्राप्त हो इस आश्रय से वे स्थापन किया हुआ मार्ग का बोध देते हैं, उसी मार्ग को गुरूमार्ग कहते हैं।

प.प. बाबा व दादा महाराज की स्थापना किया हुआ आज का यह मार्ग है जो कि सृष्टि के अन्त तक इसी प्रकार से ऐसा ही चलने वाला है, जिसमें वं. दादा जी के अनेक जन्म जो ईश्वरी कृपा प्राप्त करने के लिए खर्च हुए, वह कृपा उन्होंने आसानी से, हमारी पात्रता – अपात्रता न देखते हुए, हमें प्रदान की है। ऐसे गुरूमार्ग में शिष्य परम्परा कितनी

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-world.com

Patron
Lalita Bhavani Shankar Bhatte

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Shaarp Advertising
Cell : 09810284136

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

ज्यादा है, इसका महत्व नहीं है, मतलब लाखों लोग आकर सिर्फ नमस्कार करके चले गये तो वह महत्वपूर्ण नहीं हैं, तो शिष्य परम्परा से ज्यादा सिद्ध परम्परा अधिक महत्वपूर्ण है। मतलब जो भक्त इस मार्ग का लाभ लेने के लिये आये वह सिद्ध अवस्था तक खुद विकास कर पाये, यह जरूरी है। यह प्राप्ती कैसे हो इसका विचार करना और उसके लिए प्रयत्न करना यह हमारा आज का कर्तव्य है। यह साध्य किया तो ही सच्चे माईने में हमने गुरूमार्ग का अनुसरण किया ऐसा कह सकते हैं।

हर एक व्यक्ति का प्राप्त जीवन दो अवस्थाओं में कार्यान्वित होता है, इहलोक और परलोक। इहलोक में काया यानि देह धारणा होती है और परलोक में कर्म और देह त्याग के बाद आत्मा और सूक्ष्मदेह का वास होता है। प्राप्त हुआ हर एक जीवन अपना स्थित्यंतर करने के लिये होता है, लेकिन जीवन प्राप्ती के बाद कर्म का या जीवन का ज्ञान हमें गुरू के मार्गदर्शन के बिना नहीं होता और इहलोक के अन्य ऐहिक और ऐच्छिक विषयों की प्राप्ती करने में जीवन व्यर्थ खर्च होता है। आज हमारा सभी का जीवन इतना गतिमान हो गया है कि हमें अपने खुद के जीवन के बारे में, उसके विकास के बारे में, उपासना के बारे में या ईश्वर के बारे में सोचने का समय नहीं है। इस प्रकार के जगत में कार्य करने के लिये श्री गुरू ने अपने गुरूमार्ग में दो प्रमुख साधनों की सिद्धता की है। विमोचन साधना जो इहलोक के लिये है और दीक्षा जो परलोक अवस्था के लिये है।

जब हम कोई जीवन की कठिनाई या तकलीफ दूर करने के लिये इस मार्ग का लाभ लेने के लिये आये तो उस कर्म को गुरू के आशीर्वाद से विमोचित होना था और उसी के साथ हमारे जीवन का स्थित्यंतर हो, सार्थक हो और उसी की लिए दीक्षाओं का लाभ हो यह आत्मा की इच्छा थी। यह दीक्षाओं का लाभ मतलब गुरू कृपार्शीवाद है, जो अनेक जन्मों तक हमारे साथ रहे, ऐसी सिद्धता इस गुरू मार्ग में है। विमोचन यह संस्कार इहलोक में करना है, काया पर मतलब जब कोई प्रतिकूल कर्म की धारणा काया में होती है तब वह विमोचन कार्यन्वित होता है और उस प्रतिकूल कर्म की अपूर्णता गुरू शक्ति से पूरी होती है। हम गुरूमार्गी होने के बाद यह सोचने है कि विमोचन हो गया मतलब जीवन की या हमारे कर्म की सभी प्रतिकूलता श्री गुरू ने निकाल दी और अब हमें आसानी से ऐहिक और ऐच्छिक विषयों की प्राप्ती हो जायेगी। यह सोचकर हम आज भी इस गुरू मार्ग को अपना रहे हैं और कैसे भी (irresponsibly) बर्ताव करके यह सोचते है या कहते हैं कि जो कुछ भी हुआ वो गुरू की इच्छा से हुआ। लेकिन विमोचन का यह मायना नहीं है। और गुरू मार्गी होने के बाद बिना सोचे बर्ताव करना और उसे गुरू मार्ग की इच्छा कहना भी ठीक नहीं है। तो फिर विमोचन मतलब क्या है? तो विमोचन साधना से प्रतिकूल कर्म की अपूर्णता गुरूशक्ति से प्रदान की जाती है, जिससे, जब वह प्रतिकूल कर्म धारण होता है तब उससे प्रतिकूल विचार निर्माण करके कोई प्रतिकूल आचार (बर्ताव) करने की बुद्धी देता है; तब उस प्रतिकूल कर्म में जो गुरूशक्ति धारण हुई वह वेसा न करने की प्रेरणा हमें देता है। अगर उसे प्रेरणा के साथ हो गये तो गुरूशक्ति उसकी ताकत भी हमें देती है जिससे हम आसानी से उस प्रतिकूल आचार और विचारों से दूर हो जाते हैं। यही विमोचन है और जितनी हमारी उापसना और सेवा गुरूमार्गदर्शन के अनुसार हो उतनी प्रेरणा और गुरू शक्ति ज्यादा प्रवाहित होती रहती है। लेकिन वह प्रेरणा न समझते हुए अगर हमसे प्रतिकूल आचार हो गया हो तो वह और एक प्रतिकूल कर्म की निर्माण करता है जो हमें आज के आचार के लिए और फिर प्रवाहीत होते समय तकलीफदायक होता है। वैसे किया और उस प्रतिकूलता के फल को गुरू की इच्छा कहा तो यह सही नहीं क्योकि हमारे अनेक जन्मों की आदतों के वजह से हमने गुरूशक्ती को विमोचन साधन से कार्यन्वित करने नहीं दिया। यह पूरी तरह से हमारी गलती है और ऐसी गलतीयाँ न हो इसीलिए परमार्थ प्रश्नावाली है।

विमोचन साधना कार्यन्वित होकर हमारे माध्यम का विकास हो रहा है यह कैसे समझ आयेगा? तो

विमोचन साधना काया और प्रवाहित होने वाले कर्म पर संस्कार करता है। हमारे मनोनिग्रह से और गुरूशक्ति से हमें इसका लाभ जब होने लगता है तो मन की धारणा होने लगती है। मतलब पहले प्रार्थना या कोई अन्य उपासना करते समय काया–वाचा–मन का कोई भी तालमेल नहीं थे, उस उपासना से समाधान नहीं था; लेकिन अब मन की एकाग्रता बढ़ गई है, प्रार्थना ध्यान देकर कही जाती है या नामःस्मरण करते समय 10–15 प्रतिशत मन की एकाग्रता रहती है। इसी का मतलब है कि विमोचन कार्यान्वित होकर मन की धारणा हो रही है।

मन की धारणा होने लगी तो दीक्षाओं का संस्कार कार्यान्वित होने लगता है। विमोचन साधना, इसलोक में काया और कर्म पर है तो दीक्षाओं का संस्कार परलोक का साधन है जो मन और सूक्ष्मदेह पर कार्यान्वित होता हैं तब प्राप्त जीवन का सार्थक गुरू कृपाशीर्वाद प्राप्त करके किस प्रकार हो, यह विचार जीवन में आता हैं। गुरूकृपा या गुरूशक्ति यह एक शक्ति है (Form Of Enegy) जिसे तात्विक शक्ति के (Energy) नियम लागू होते है। (Law of causmic enery)) श्री गुरू ने गुरूशक्ति हमारा और हमारे परिवार का उद्धार करने के लिए आसानी से संक्रमित होने के लिए प्रतिमाएँ सिद्ध की है और हमें प्रदान की है; लेकिन यह गुरूशक्ति प्राप्त होकर हमारे माध्यम में थोड़ा बहुत प्रवाहित होकर स्थित हो गई तो उसका कोई उपयोग नहीं। हमें कार्यान्वित रखने के लिऐ उसका प्रवाह–धारणा और विनियोग यह सतत् रूप से (continuously) होता रहना जरूरी है। (Flow of enery should be continuous) तो ही वह कार्यन्वित रहेगी; इसीलिए इस गुरूमार्ग में नित्य उपासना आवश्यक है; नेमित्तिक उपासना नहीं चाहिए। नित्य ऊँकार साधना, हफ्ते में एक बार कार्यकेन्द्र पर आरती साधना का लाभ लेना और सबसे महत्वपूर्ण है ज्ञान, जीवन का ज्ञान और इस गुरूमार्ग का ज्ञान, जो मुलाकात साधना से प्राप्त होता है। ज्ञान प्राप्त हुआ तो बुद्धि का विकास होगा, फिर विचार स्थिर होंगे और मन की धारणा होगी। यह संस्कार करने के लिए वार्षिक साधना सम्मेलन का लाभ लेना आवश्यक है। हमें आज अन्य ऐहिक और ऐच्छिक विषयों के लिऐ समय है लेकिन साधना सम्मेलन के लिए समय निकालने के लिए सोचना पड़ रहा है। यह स्नेह सम्मेलन नहीं है तो साधना सम्मेलन है, जिसमें साल में एक बार पांच दिन व्रतस्त रहकर एक आहार, एक विचार और एक उपासना करके अपने काया–वाचा–मन पर संस्कार करना है, जिससे हम अपने जीवन की स्थित्यंतर अवस्था प्राप्त कर सकें। क्या इस बात का विचार हमने गहराई से किया है ? क्या हमें हमारे जीवन का सार्थक करना है? आज शादी के लिए अगर कोई लड़की या लड़का देखने के लिऐ हम जाये और उसने पसन्द कर लिया तो हम बहुत खुश हो जायेगें। क्या उतनी भी खुशी आज हमें है ? जब श्री गुरू ने/ ईश्वर ने उसका कार्य करने के लिए हमें चुना है। श्री गुरू का हम पर आत्मविश्वास पूरी तरह से है कि उनका कार्य हम कर सके। लेकिन हमें उसकी गहराई का पता नहीं हैं और खुद में विश्वास भी नहीं है। हममें अनेक दुर्गुण होते हुए भी श्री गुरू ने हम पर कृपा की है। हमें अपनाया है लेकिन हम अभी तक दूसरों के दुर्गुणों की चर्चा करने में भी लगे है। दूसरों के दुर्गुण दिखाना यही हमारा सबसे बड़ा दुर्गुण है। आज के बाद यह प्रमाद हमारे माघ्यम से न हो ऐसा हम निश्चय करते है और इसलिये श्री गुरू हमें शक्ति दे ऐसी प्रार्थना परम् पूज्यनिय बाबा एवं श्री सदगुरूनाथ दादा इनके चरणों में करते है।

इस साल वार्षिक साधना सम्मेलन मुंम्बई में 23 दिसम्बर से 28 दिसम्बर तक आयोजित किया है। इसका लाभ हम सभी ले और वं. दादा जी और प. पू. बाबा की दुआ वे यह जगत्कल्याण के लिए स्थित्यंतरीत अवस्था का नया दौर कार्यन्वित करें, यही उनके चरणों में प्रार्थना है।

।। शुभं भवंतु।।

जनम् जनम् का सेवक

श्री साईकल्प आध्यात्म संस्था

बात सीधी सी है, खोज खुद की ही है।

मोह माया का है, कर्म जन्मों का है।

बाँधा रिश्तों ने है, सीचा कर्मों ने है।

पूँजी अच्छे की है, ऋण गुरूर का है।

छाँव माता की है, उंगली पिता की है।

साथ मित्रों का है, सीख गुरूओं की है।

सबक यह पाया कि, शुक्रिया मालिक का है।

जो रहा दिखलाता है, एक अनदेखी डोर से जो भवसारगर तपाता है।

दर्श युगों का जो, पल ही में दर्शाता है।

यह दुनिया ही कुटुम्ब है, पाठ सीखलाता है।

अहं ब्रह्मस्मि का ज्ञान दिलवाता है

इस घने जंगल को पार करवाता है।

मनकी इस कालिख को, सहज की मिटाता है।

विश्व कल्याण की स्वप्न, बनवाता है।

साधन बना के हमें, इमारतें बनवाता है।

व्यूह को पार कर, अंश अपना ही बनाता है।

सीख इतनी सी है, कि सिर्फ मालिक से डरें।

राह पर उसकी चलो, उसका ही सजदा करो।

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी।

अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@mail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible